

SWAक्षर

स्क्रीनराइटर्स एसोसिएशन का न्यूज़ लैटर



कोर्ट में लड़िए अपने हक़ की लड़ाई

हमारी 'लीगल एंड पॉलिसी' आपकी मदद को है तैयार

यह एक बड़ी ख़बर है! एसडबल्यूए ने अपने सदस्य स्क्रीनराइटर्स की मदद के लिए एक 'लीगल एंड पॉलिसी' की घोषणा की है। इसके ज़रिए एसडबल्यूए के सदस्य कॉपीराइट चोरी, गोपनीयता उल्लंघन (ब्रीच ऑफ़ कॉन्फ़िडेंशियेल्टी), भुगतान और क्रेडिट सम्बंधी मामलों को कोर्ट तक ले जाने में मदद पा सकेंगे। इस क़दम को उठाकर एसडबल्यूए ने एक बार फिर सिद्ध किया है कि वह अपने सदस्यों की ईटलैक्चुल प्रॉपर्टी और जायज़ हक़ों की रक्षा के लिए वचनबद्ध है।

बहुत से मामलों में किसी निर्माता या निर्देशक या साथी-सदस्य के खिलाफ़ अपने वाजिब हक़ों की लड़ाई में पीड़ित एसडबल्यूए सदस्य के पास कोर्ट जाने का ही आखिरी रास्ता बचता है। इसीलिए एसडबल्यूए की डीएससी को एक अर्से से क़ानूनी मामलों में आर्थिक सहायता देने की ज़रूरत महसूस हो रही थी।

इस पॉलिसी के अंतर्गत, एसोसिएशन अपनी डिसप्यूट सैटलमेंट कमेटी (डीएससी) और विशेषज्ञ वकीलों की सलाह के आधार पर, सदस्यों को 50 प्रतिशत वकील की फ़ीस (अथवा एक निर्धारित राशि, दोनों में से जो भी कम हो) प्रदान करेगी। पॉलिसी के बाक़ी दिशा-निर्देशों को भी जल्द ही तय किया जाएगा। इस उपाय से उन सदस्यों की इंसानाफ़ की लड़ाई मज़बूत होगी जो डीएससी से सुनवायी के बाद मामले को कोर्ट ले जाना चाहते हैं पर आर्थिक रूप से कमज़ोर पड़ जाते हैं। साथ ही, एसडबल्यूए ऐसे कई कॉपीराइट विशेषज्ञ वकीलों के सम्पर्क में है जो इसके सदस्यों को किफ़ायती दरों पर क़ानूनी मदद देने के इच्छुक हैं।

मिनिमम बेसिक कॉन्ट्रैक्ट की लड़ाई में एसडबल्यूए को मिली बड़ी जीत

एसडबल्यूए की एमबीसी सब-कमिटी (मिनिमम बेसिक कॉन्ट्रैक्ट सब-कमिटी) और लेखकों के अधिकारों के लिए लड़ते रहे साथी राइटर्स (जिनमें अधिकांश एसडबल्यूए की एक्ज़ेक्यूटिव कमिटी के सदस्य भी रहे हैं) के अथक प्रयासों की बदौलत एसोसिएशन को मिनिमम रेम्यूनरेशन (न्यूनतम पारिश्रमिक) और निष्पक्ष कॉन्ट्रैक्ट के चलन को स्थापित करने में बड़ी सफलता हाथ लगी है।

एसडबल्यूए काफ़ी समय से प्रॉडक्शन के बजट के आधार पर स्क्रीनराइटर्स की फ़ीस तय करने के लिए प्रॉड्यूसर संस्थाओं और बाक़ी प्रॉड्यूसर्स को राज़ी करने का प्रयास कर रही थी। हाल ही में, प्रॉड्यूसर रितेश सिधवानी, जोकि लेखक-निर्माता-निर्देशक फ़रहान अख़्तर के साथ एक्सल एंटरटेनमेंट कम्पनी के मालिक हैं, ने एसडबल्यूए के मिनिमम रेम्यूनरेशन स्लैब को स्वीकार कर लिया है। यह स्लैब न्यूनतम पारिश्रमिक को निर्धारित करता है जिसे योग्यता के आधार पर बढ़ाया जा सकता है।

(पृष्ठ 2 पर पढ़ें...)

कॉन्ट्रैक्ट से तुम दोस्ती कर लो

मानद महासचिव की क्लम से

अक्सर कई राइटर्स किसी स्क्रिप्ट पर महीनों काम करते हैं, लेकिन किसी विवाद की स्थिति में सुनने में आता है कि 'मैंने तो यारी-दोस्ती में लिखा था'। दोस्तों, यह आदत आपको जल्द से जल्द बदल लेनी चाहिए। क्यों? क्योंकि यह सिनेमा राइटिंग के लिए आपके जज़्बे, आपके हुनर और आपकी अपनी हैसियत के साथ एक बड़ा अन्याय है।

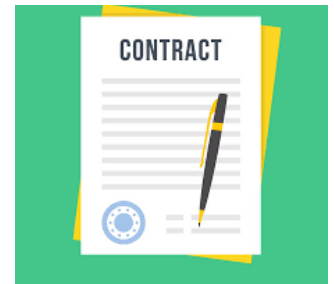
मैं पूछता हूँ कि जब एक दिहाड़ी मज़दूर काम शुरू करने से पहले अपनी मज़दूरी की शर्तें सामने रख देता है तो एक राईटर ऐसा क्यों नहीं कर सकता? जब एक पानीपुरी वाला अपने सामान की एक निश्चित रेट पहले ही तय करके रखता है तो एक लेखक अपने काम के रेट तय क्यों नहीं कर सकता? जब एक घरेलू मेड काम के बढ़ जाने पर पगार बढ़ाने की बात करने में नहीं हिचकती तो एक स्क्रीनराइटर क्यों हिचकता है फिर से मोल-भाव करने में तब जब किसी स्क्रिप्ट के रीड्राफ्ट खत्म ही ना हो रहे हों?

कहने का मतलब है कि जब भी आप कोई स्क्रिप्ट लिखे, जिसका व्यवसायिक मूल्य है, तो उसे बिना कॉन्ट्रैक्ट साइन किए किसी को ना दें। खुद को कमज़ोर मत मानिए। कुछ निर्माता जो या तो खुद अनजान हैं या जिन्होंने ठान ही लिया है राईटर का शोषण करना है, सिर्फ तब ही आपको नुकसान पहुँचा सकते हैं जब आप उन्हें ऐसा करने का मौका देंगे।

हम एक ऐसी इंडस्ट्री में काम करते हैं जहाँ फ़िल्म के प्रलॉप होने पर सबसे पहले लेखक के माथे ही ठीकरा फोड़ा जाता है। और अगर फ़िल्म हिट हो गयी, तो सभी को इसका क्रेडिट मिलता है सिवाय राईटर के। उस लेखक को, जिसने सबसे पहले उस फ़िल्म की परिकल्पना की थी, भुला दिया जाता है। तो सिर्फ आपको ही अपनी क़द्र करनी होगी। एसोसिएशन भी तब ही आपकी मदद कर पाएगा जब आपके पास कॉपीराइट उल्लंघन के पुख्ता सबूत हों या, आपने एक निष्पक्ष कॉन्ट्रैक्ट के ज़रिए अपने हितों को सुरक्षित किया हो।

सौ बात की एक बात - कॉन्ट्रैक्ट साइन कीजिए। अपने काम करने के नियम और शर्तों को खुद तय करके लिखित में पक्का कीजिए। अगर कुछ भी ग़लत हुआ, तो ये कॉन्ट्रैक्ट ही आपका सच्चा साथी साबित होगा। इसे इस तरह सोचिए - क्या आप अपनी प्रॉपर्टी या सोने से भरा संदूक किसी को यूँ ही बिना किसी लिखा-पढ़ी के 'इन गुड फ़्रेथ' दे देंगे? नहीं ना? तो बिना कॉन्ट्रैक्ट साइन किए अपनी स्क्रिप्ट क्यों देते हैं?

आपकी स्क्रिप्ट आपकी इंटरलैक्चुअल प्रॉपर्टी है और अब वक़्त आ गया है कि आप इसे सोने से भरे अपने संदूक की तरह इस्तेमाल करें।



सुनील सालगिया

मिनिमम बेसिक कॉन्ट्रैक्ट की लड़ाई में एसडबल्यूए को मिली बड़ी जीत... (पृष्ठ 1 से आगे...)

इसके बाद, रितेश अपनी एसोसिएशन प्रॉड्यूसर गिल्ड ऑफ़ इंडिया के सामने इस स्लैब को अनिवार्य गाइडलाइंस का हिस्सा बनाने पर ज़ोर देंगे ताकि लेखकों के हितों को सुरक्षा दी जा सके।

इस क़दम से फ़िल्म इंडस्ट्री में स्क्रीनराइटर्स को पेशेवर रूप से फ़ायदा तो होगा ही, साथ ही उचित सम्मान भी मिलेगा। गौर करने वाली बात है कि एसडबल्यूए के मिनिमम बेसिक कॉन्ट्रैक्ट में स्क्रिप्ट, स्टोरी, स्क्रीनप्ले और डायलॉग के लिए तयशुदा क्रेडिट की गारंटी का और किसी भी पार्टी को मनमाने रूप से कॉन्ट्रैक्ट की शर्तों को तोड़ने से रोकने का प्रावधान भी है।

काफ़ी वक़्त से आपकी एसोसिएशन यह लड़ाई लड़ती हुई आ रही थी और कई दफ़े इस तरह की एक बड़ी जीत की दहलीज़ छू पाने में भी कामयाब हुई थी। पर यूँ कह लीजिए कि हर बार बस बात बनते-बनते रह गयी। 5वीं स्क्रीनराइटर्स कॉन्फ़्रेंस (अगस्त 2018) में एक चर्चा के दौरान भी सिद्धार्थ

रॉय कपूर (प्रेसीडेंट, प्रॉड्यूसर्स गिल्ड ऑफ़ इंडिया), अभिनेता-निर्माता-निर्देशक आमिर ख़ान, सोमेन मिश्रा (क्रिएटिव हैड, धर्मा प्रॉडक्शंस) ने खुलकर लेखकों और गीतकारों के लिए मिनिमम बेसिक कॉन्ट्रैक्ट की ज़रूरत का समर्थन किया था। आखिरकार एसडबल्यूए की मेहनत रंग लायी है और अब एक्सल एंटरटेनमेंट जैसा एक बड़ा प्रॉडक्शन हाउस भी इन मुद्दों के समर्थन में उतर आया है। आशा है कि बाक़ी निर्माता भी जल्द ही इस अभियान से जुड़ जाएँगे।

एसोसिएशन की ओर से इस संघर्ष के पुरोधा रहे स्क्रीनराइटर और एसडबल्यूए की ईसी के वरिष्ठ सदस्य अंजुम रजबअली का कहना है- "मिनिमम रेम्यूनेशन स्लैब्स से ना सिर्फ़ लेखकों की फ़ीस में इज़ाफ़ा होगा बल्कि निर्माताओं को भी बेहतर स्क्रिप्ट्स मिलेंगी। आज इंडस्ट्री को अच्छी स्क्रिप्ट्स की सख़्त ज़रूरत है और इसके लिए उन्हें स्क्रीनराइटर्स को उनका वाजिब हक़ देना होगा।"

MINIMUM REMUNERATION SLABS - FOR FEATURE FILMS (PROPOSED BY SWA)

PRODUCTION BUDGET	STORY	SCREENPLAY	DIALOGUE	SCRIPT (STORY+SCREENPLAY +DIALOGUE)
LESS THAN INR 5 CR	INR 3 LAKH	INR 5 LAKH	INR 4 LAKH	INR 12 LAKH
INR 5 CR - INR 15 CR	INR 6 LAKH	INR 10 LAKH	INR 8 LAKH	INR 24 LAKH
MORE THAN INR 15 CR	INR 9 LAKH	INR 15 LAKH	INR 12 LAKH	INR 36 LAKH

NOTE: SWA STRONGLY RECOMMENDS THAT ALL ITS MEMBERS USE THE ABOVE SLABS IN THEIR NEGOTIATIONS WITH PRODUCERS.

शुक्रिया, डीएससी!

एसडबल्यूए सदस्यों के अनुभव

एक नामी प्रॉडक्शन कम्पनी ने मुझे कॉन्ट्रैक्ट में तय की गयी स्क्रिप्ट डवलपमेंट की फ़ीस नहीं दी थी। पर मैंने जैसे ही डीएससी में केस फ़ाइल किया, निर्माताओं ने अपनी ग़लती मानी और मुझे ना सिर्फ़ तयशुदा डवलपमेंट फ़ीस दी बल्कि ऊपर का अतिरिक्त खर्च भी दिया। यह सिर्फ़ डीएससी की मध्यस्थता के कारण ही सम्भव हो पाया।

सुरेंद्र वर्मा, प्रख्यात नाटककार और वरिष्ठ फ़िल्म-लेखक

मेरी लिखी एक स्क्रिप्ट पर मेरी जानकारी के बिना एक फ़िल्म बना ली गयी थी। तब मैं डीएससी के पास आयी। कमीटी ने ना सिर्फ़ मुझे भावनात्मक सहारा दिया बल्कि बहुत ही कम वक़्त में केस चलाकर मुझे न्याय दिलाया। मुश्किल वक़्त में इंडस्ट्री के बड़े दिग्गजों के आगे राइटर्स का साथ देने के लिए डीएससी का बहुत आभार।

मानवी शर्मा, फ़िल्म लेखिका

एसडबल्यूए की डीएससी ने दो बार मुझे मेरा हक़ दिलवाया है। मैं यह जानकर राहत की साँस लेता हूँ कि हमारी एसोसिएशन हम सब राइटर्स के कंधे से कंधा मिलकर खड़ी है और उनको क़ानूनी मदद देने के लिए तत्पर है। ज़िंदाबाद एसडबल्यूए! ज़िंदाबाद डीएससी!

अनुराग भोमिया, फ़िल्म लेखक

डीएससी ने मुझे अब तक दो बार टेलीविजन शोज़ के निर्माताओं से मेरी बकाया फ़ीस दिलवायी है। मैंने अपने अनुभव से ये भी जाना है कि अपने हितों की रक्षा के लिए कॉन्ट्रैक्ट साइन करना कितना ज़रूरी है। मैं स्क्रीनराइटर्स एसोसिएशन और डीएससी को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ।

महेश रामचंदानी, टीवी और फ़िल्म लेखक

एक कम्पनी के क्रियेटिव प्रॉड्यूसर ने मुझसे एक टीवी शो की स्क्रिप्ट माँगी थी। बाद में उस क्रियेटिव प्रॉड्यूसर ने मुझे बिना बताए उस स्क्रिप्ट पर एक एपिसोड बना दिया। मैंने एसडबल्यूए का रुख किया और जब डीएससी के ज़रिए प्रॉडक्शन कम्पनी को सच्चाई का पता लगा तो उन्होंने मुझे मेरी पूरी फ़ीस दी। मेरा मानना है कि एसडबल्यूए हम सब राइटर्स का एक परिवार है।

इमरान ख़ान, टेलीविजन राईटर



MumbaiMirror

Mon Jun 24, 2019 BANGALORE MIRROR AHMEDABAD MIRROR PUNE MIRROR

Home Mumbai Entertainment Videos Photos Sports News Opinion Lok Sabha Elections World Cup
Movie Review Bollywood Hollywood TV Music Art & Theatre Books

HOME \ ENTERTAINMENT \ BOLLYWOOD \ SCREENWRITERS ASSOCIATION FORMULATES PLAN TO ENSURE FAIR REMUNERATION FOR FILM WRITERS

WATCH ▶ Subodh Bhave: No guest appearances for Bollywood

Screenwriters Association formulates plan to ensure fair remuneration for film writers

By Himesh Mankad, Mumbai Mirror | Updated: Jun 22, 2019, 06:00 IST



Screenwriters Association will provide legal fund for writers to fight plagiarism

Updated : Mar 7, 2019, 13:28 IST | 153 views

Plagiarism in film industry has become a very common thing now. But recently, Screenwriters' Association has taken a landmark step as they have decided to provide financial help for...

[Read More](#)

Mumbai Guide Entertainment News Photos Videos Sports Lifestyle

Home / Entertainment News / Bollywood News

Aditya Dhar: Was asked to change 'How's the josh?'

Published: Apr 08, 2019, 16:28 IST | ANS

When Aditya Dhar started writing the script of 'Uc: The Surgical Strike', he wrote the dialogue as part of Vihaan's character without realising that the dialogue will become such a hit



"I still remember when Vicky said that line for the first time, 30 members of our team had goosebumps on hearing it," added the 36-year-old director during a conversation with veteran screenplay writer Robin Bhatt as part of a programme titled "Wartalaap" by the Screenwriters Association (SWA) here on Sunday.

SWA IN MEDIA

Box Office India

COLLECTIONS REVIEWS INTERVIEWS FEATURES NEWS & EVENTS

In Conversation

People have understood the value of perfect stories: Robin Bhatt

January 22, 2019



SWA sets up legal fund for writers to fight plagiarism

SWA is gearing up to start offering legal aid to writers so they can defend their intellectual property. It would include paying 50% of the lawyer's fee and helping dragging writers the a case. The SWA, a 20,000 member union, doesn't have an enforcement authority and the legal resource is unaffordable for many writers. Executive Committee member Arjun Rajadani explains, "We decided to set up a legal aid fund which will work on a case-to-case basis. If there is a need, we will also more than 50 percent."

This fund is also in the process of setting up a panel of copyright lawyers who will offer their services at concessional rates. "We have an expert on copyright law who is our first point of contact and examines complaints to determine if they warrant filing a case," he reveals, adding that the case is then forwarded to the dispute settlement committee. He goes on to assert that the SWA puts in thorough research to determine cases of infringement, as a writer from the association should be treated seriously. "The industry would be convinced that the copyright that they are creating isn't copied..."

मनोज्ञ क्षेत्रात मूल कथेच्या वाटपारीत वाढ

STARFRIDAY

SWA collaborating with CINTAA for a panel discussion titled "Pen to performance" at the Act Fest 2019

SWA collaborating with CINTAA for a panel discussion titled "Pen to performance" at the Act Fest 2019 with speakers Robin Bhatt, Jyoti Chaudhary, Ashwini Deshpande, Nandini Aher, Robin Bhatt and Mawar Pariz. "Robin Bhatt made me feel a character when you write a script and you understand the thought or do the extra mile when it comes to the script? And if the script has the essence of that come on you? — You feel happy once your film does well and all of a sudden, you start not only with the success and everything... I tell you the truth, then it feels really great when a film works. You are the man behind the camera, that is the passion you create. When you discuss that discussion, you will feel that you are a part of the screen performance. It is ever happened to you that you have written a script for someone else and later on you find out that he was not ready and have had to change the script again? — He had written a script for Ranbir Kapoor and he had to change it. We need other actors as well."



न्यूज़ फ़्लैश



- इंटरनैशनल एसोसिएशन ऑफ़ फ़िल्म एंड टेलिविजन स्कूल्स (CILCET) ने वरिष्ठ एसडबल्यूए कार्यकर्ता और ईसी सदस्य अंजुम रजबअली को एक प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय स्क्रीनराइटिंग टीचर के सम्मान से नवाज़ा
- एसडबल्यूए ने सुश्री सोनल पंचाल को फुल-टाइम एक्ज़ेक्यूटिव कोर्डिनेटर के तौर पर नियुक्त किया
- एसडबल्यूए की इंटरनल कमिटी (IC) ने यौन उत्पीड़न से लड़ने के लिए पॉलिसी बनायी। लिंक: cms.swaindia.org/uploads/SWA_IC_Policy.pdf
- एसडबल्यूए दफ़्तर पर डेबिट कार्ड से भुगतान के लिए स्वाइप मशीन की व्यवस्था शुरू

अलविदा, दोस्तों!

हम फ़िल्म और टीवी के विभिन्न क्राफ़्ट्स से जुड़े और पिछले कुछ महीनों में चल बसे हमारे सभी स्वर्गीय साथियों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

इन साथियों में एक नाम जानेमाने नाटककार, स्क्रीनराइटर, फ़िल्म निर्देशक, अभिनेता और रोड्स स्कॉलरशिप से सम्मानित श्री गिरीश कर्नाड (19 मई 1938 - 10 जून 2019) का भी था। कर्नाड को आधुनिक भारतीय साहित्य और सिनेमा की एक महत्वपूर्ण आवाज़ माना जाता था।

हमें छोड़कर जाने वाले कुछ अन्य साथियों के नाम इस प्रकार हैं: राजीव अग्रवाल, दत्ता केशव कुल्कर्णी, दिनेश साल्वी, पप्पू पॉलिस्टर, हिमांशु जोशी, वीरू देवगन, चाँद तिवारी और नरेंद्र बंजारा। फ़िल्म और टीवी इंडस्ट्री कभी उनके योगदान को भुला नहीं सकेगी। उनकी यादें सदा हमारे साथ हमारे दिलों में सलामत रहेंगी।

हम ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हैं।

एसडबल्यूए इवेंट्स: ये तो बस शुरुआत है

इवेंट्स सब-कमिटी की ज़बरदस्त मेहनत के दम पर एसडबल्यूए लगातार 'वार्तालाप' और हमारी नयी सीरीज़ 'तालीम' जैसे कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। इसके अलावा सिनेस्तान स्क्रिप्ट कॉन्टेस्ट एडिशन 2, स्टार राइटर्स प्रोग्राम, FICCI-फ्रेम्स फ्रेम यॉर आइडिया 2019, MX प्लेयर पैनस्टॉर्म जैसी प्रतियोगिताओं और प्रतिष्ठित प्लैटफ़ॉर्म पर कई पैनल डिस्कशंस में भी एसोसिएशन ने भागीदारी की है।

हम जल्द ही स्क्रीनराइटिंग और लैंगिक संवेदीकरण पर देश के पाँच बड़े शहरों में वर्कशॉप्स और एसडबल्यूए का अपना पिचिंग इवेंट आयोजित करने वाले हैं।

